11

अरे जिया! जग धोखे...

(कविवर पण्डितश्री दौलतरामजी)

अरे जिया! जग धोखे की टाटी[१] ॥टेक॥

झूठा उद्यम[२] लोग करत हैं, जिनमें निशदिन घाटी[३] ॥1॥

जानबूझ कर अन्ध बने हैं, आखिन बाँधी पाटी[४] ॥2॥

निकल जाँयगे प्राण छिनक में, पड़ी रहेगी माटी[५] ॥3॥

'दौलतराम' समझ मन अपने, दिल की खोल कपाटी[६] ॥4॥

१. चित्रपट; २. पुरुषार्थ; ३. नुकसान; ४. पट्टी; ५. मिट्टी; ६. दरवाजे